बाल महाभारत कथा

‘अंबा और भीष्म’

(मॉड्यूल-2/2)

महाभारत कथा

मुख्य कथावस्तु भाग-2

सत्यवती के पुत्र चित्रांगद की युद्ध में मृत्यु के पश्चात विचित्रवीर्य का राजा बनना तथा भीष्म द्वारा राज–काज सँभालते हुए काशीनरेश की दो बेटियों से विचित्रवीर्य का विवाह कराना एवं बड़ी बेटी को उसके आग्रह पर राजा शाल्व के पास भेज देना इस प्रकार की कथावस्तु पूर्वपठित भाग 1 में वर्णित है।

भाग 2 की कथावस्तु में अंबा का सौभराज शाल्व के पास से निराश लौटने पर भीष्म को अपने प्रति जिम्मेदार बताते हुए उनके समक्ष विवाह प्रस्ताव रखना परंतु भीष्म द्वारा अंबा को अपनी प्रतिज्ञा याद दिलाकर पुनः अंबा को शाल्व के पास भेज दिया जाना।

पुनः शाल्व द्वारा अस्वीकार किए जाने पर अंबा का लाचार होकर छह वर्ष तक इधर-उधर भटकते रहना फिर क्रोधित होकर भीष्म से प्रतिहिंसा के भाव से ब्राह्मणों से सहायता की याचना करना तथा उनके सुझाव पर परशुराम की शरण में जाना और भीष्म के वध की इच्छा प्रकट करना। इसके पश्चात परशुराम और भीष्म में घोर युद्ध तथा परशुराम ने हार मानकर अंबा को भीष्म की ही शरण में जाने को कहा। अंत में अंबा का तपोबल द्वारा पुरुष शरीर प्राप्त करना तथा युद्ध में अर्जुन के पक्ष से खड़े होकर भीष्म को आहत होकर गिरने पर उसका क्रोध शांत होना। इस प्रकार की कथावस्तु की शेष चर्चा इस भाग 2 में वर्णित है।

अंबा और भीष्म

उन्होंने विचित्रवीर्य से कहा– "वत्स, राजा शाल्व अंबा को स्वीकार नहीं करता। इससे विदित होता है कि उसकी इच्छा अंबा को पत्नी बनाने की नहीं थी। अब उसके साथ तुम्हारा ब्याह करने में कोई आपत्ति नहीं रही है।" पर विचित्रवीर्य अंबा के साथ ब्याह करने को राजी न हुए। बेचारी अंबा न इधर की रही, न उधर की। कोई और रास्ता न देख वह भीष्म से बोली– "गांगेय, मैं तो दोनों ओर से ही गई। मेरा कोई भी सहारा न रहा। आप ही मुझे हर लाए थे, अतः अब आपका यह कर्तव्य है कि आप मेरे साथ ब्याह कर लें।"

शब्दार्थ– वत्स= छोटा बच्चा, विदित= जानकारी, राजी= इच्छा का भाव, कर्तव्य= दायित्व/जिम्मेदारी

भीष्म ने उसकी बात ध्यान से सुनी और अपनी प्रतिज्ञा की याद दिलाकर बोले– "अपनी प्रतिज्ञा तो मैं नहीं तोड़ सकता।" उन्होंने अंबा की परिस्थिति समझकर विचित्रवीर्य से दोबारा आग्रह किया, पर वह न माना। भीष्म ने अंबा को फिर समझाया और कहा कि सौभराज शाल्व के ही पास जाओ और एक बार फिर प्रार्थना करो। लाचार अंबा फिर शाल्व के पास गई और उसकी बहुत मिन्नतें कीं, लेकिन दूसरे की जीती हुई कन्या को स्वीकार करने से सौभराज ने साफ इंकार कर दिया। अंबा इस प्रकार छह साल तक हस्तिनापुर और सौभदेश के बीच ठोकरें खाती फिरी।

शब्दार्थ– प्रतिज्ञा= शपथ, लाचार= असमर्थ/मजबूर, मिन्नतें= प्रार्थना/विनती, इंकार= अस्वीकार

उसने अपने इस सारे दुःख का कारण भीष्म को ही समझा। उन पर उसे बहुत क्रोध आया और प्रतिहिंसा की आग उसके मन में जलने लगी। भीष्म से बदला लेने की इच्छा से वह कई राजाओं के पास गई और उनको अपना दुखड़ा सुनाया। भीष्म से युद्ध करके उनका वध करने की उसने राजाओं से प्रार्थना की, पर राजा लोग तो भीष्म के नाम से ही डरते थे। किसी में इतना साहस न था कि भीष्म से युद्ध करे। क्षत्रियों से एकदम निराश होकर अंबा ने तपस्वी ब्राह्मणों की शरण ली। तपस्वियों ने कहा– "बेटी, तुम परशुराम के पास जाओ।

शब्दार्थ– प्रतिहिंसा= हिंसा के बदले में की गई हिंसा, दुखड़ा= दुःख, सहस= हिम्मत

भीष्म और परशुराम युद्ध

वे तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।" तब ऋषियों की सलाह पर अंबा परशुराम के पास गई। अंबा की करुण कहानी सुनकर परशुराम का हृदय पिघल गया। उन्होंने दयार्द्र स्वर में कहा– "काशिराज–कन्ये, तुम मुझसे क्या चाहती हो?" अंबा ने कहा– "ब्राह्मण–वीर, मेरी प्रार्थना केवल यही है कि आप भीष्म से युद्ध करें। मैं आपसे भीष्म के वध की भीख माँगती हूँ।" परशुराम को अंबा की प्रार्थना पसंद आई। बड़े उत्साह के साथ वह भीष्म के पास गए और उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। दोनों कुशल योद्धा थे और धनुष–विद्या के जानकार भी।

शब्दार्थ– सलाह= परामर्श/राय, दयार्द्र स्वर= दया से युक्त स्वर, ललकारा= युद्ध के लिए आह्वान का भाव

दोनों ही जितेंद्रिय और ब्रह्मचारी थे। समान योद्धाओं की टक्कर थी। कई दिनों तक युद्ध होता रहा, फिर भी हार-जीत का निश्चय न हो सका। अंत में परशुराम ने हार मान ली और उन्होंने अंबा से कहा- "जो कुछ मेरे वश में था, कर चुका। अब तुम्हारे लिए यही उचित है कि तुम भीष्म ही की शरण लो।" पर अंबा ऐसी बातों से कब विचलित होने वाली थी? उसने वन में जाकर फिर तपस्या शुरू की और तपोबल से स्त्री-रूप छोड़कर पुरुष बन गई और उसने अपना नाम शिखंडी रख लिया।

शब्दार्थ- जितेन्द्रिय= संयमी/जिसने इंद्रियों को अपने वश में कर लिया हो, विचलित= अस्थिर/चंचल

अर्जुन और शिखंडी

जब कौरवों और पांडवों के बीच कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध हुआ, तो भीष्म के विरुद्ध लड़ते समय शिखंडी रथ के आगे बैठा था और अर्जुन ठीक उसके पीछे। ज्ञानी भीष्म को यह बात मालूम थी कि अंबा ही शिखंडी का रूप धारण किए हुए है। इसलिए उन्होंने उस पर बाण चलाना अपनी वीरोचित प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा। शिखंडी को आगे करके अर्जुन ने भीष्म पितामह पर हमला किया और अंत में उन पर विजय प्राप्त की। जब भीष्म आहत होकर पृथ्वी पर गिरे, तब जाकर अंबा का क्रोध शांत हुआ।

शब्दार्थ- वीरोचित= वीरतापूर्ण, पितामह= पिता का पिता/दादा, आहत= घायल/जख्मी

प्रश्नोत्तर भाग 2

प्रश्न-1 सौभदेश और हस्तिनापुर के मध्य अंबा क्यों भटकती रही?

उत्तर- क्योंकि उसे आशा थी कि शाल्व या विचित्रवीर्य कोई न कोई उसे पत्नी रूप में स्वीकार अवश्य करेगा। इसी उम्मीद में अंबा छह वर्षों तक इधर–उधर भटकती रही।

प्रश्न-2 चित्रांगद के मृत्यु के बाद विचित्रवीर्य को राजगद्दी क्यों दी गई?

उत्तर- चित्रांगद के मृत्यु के बाद विचित्रवीर्य को राजगद्दी इसलिए दी गई क्योंकि चित्रांगद का कोई पुत्र नहीं था।

प्रश्न-3 राजा शाल्व ने अंबा को पत्नी के रूप में क्यों नहीं स्वीकार किया?

उत्तर- राजा शाल्व ने अंबा को पत्नी के रूप में इसलिए नहीं स्वीकार किया क्योंकि सभी राजकुमारों के सामने भीष्म ने राजा शाल्व को युद्ध में पराजित किया था और अंबा को बलपूर्वक हरण करके ले गए थे।

प्रश्न-4 विचित्रवीर्य और शाल्व के द्वारा विवाह के लिए मना करने पर अंबा ने भीष्म से क्या कहा?

उत्तर- अंबा ने इन सब का कारण भीष्म को ठहराया और भीष्म को उससे विवाह करने को कहा।

प्रश्न-5 अंबा भीष्म से क्यों बदला लेना चाहती थी और उसने उसके लिए क्या किया?

उत्तर- अंबा ने अपने सारे दुःख का कारण भीष्म को ही समझा इसलिए वह कई राजाओं के पास गई और भीष्म से युद्ध करके उनका वध करने की प्रार्थना की।

प्रश्न-6 क्षत्रियों से निराश होकर अंबा जब ब्राह्मणों की शरण में गई तो उन्होंने उसे क्या सलाह दी?
उत्तर- तपस्वियों ने अंबा को परशुराम के पास जाने को कहा।

प्रश्न-7 अंबा की करुण कहानी सुनकर परशुराम ने क्या कहा?
उत्तर- अंबा की करुण कहानी सुनकर परशुराम ने अत्यंत दयार्द्र स्वर में कहा– "काशिराज कन्ये, तुम मुझसे क्या चाहती हो?"

प्रश्न-8 परशुराम और भीष्म के युद्ध का वर्णन कीजिए।

उत्तर- दोनों ही जितेंद्रिय और ब्रह्मचारी थे । कई दिनों तक युद्ध होता रहा, फिर भी हार जीत का निश्चय न हो सका । अंत में परशुराम ने हार मान ली।

प्रश्न-9 भीष्म किस अवहेलना को सह नहीं पाए और उन्होंने क्या किया?

उत्तर- काशिराज की कन्यायों ने भीष्म की तरफ़ से दृष्टि फेर कर उनकी अवहेलना की जो भीष्म सह न सके इसलिए उन्होंने सभी राजकुमारों को हराकर तीनों राजकन्यायों को बलपूर्वक हस्तिनापुर ले गए।

प्रश्न-10 अंबा शिखंडी कैसे बनी?

उत्तर- अंबा तपोबल से स्त्री–रूप छोड़ कर पुरुष बन गई और उसने अपना नाम शिखंडी रख लिया।

प्रश्न-11 शिखंडी रूप में अंबा ने युद्ध में किसको सहारा दिया?
उत्तर शिखंडी रूप में अंबा ने अर्जुन के आगे खड़े होकर भीष्म को आहत करने में सहारा दिया।

प्रश्न-12 अंबा का क्रोध कब शांत हुआ?
उत्तर- शिखंडी को आगे करके अर्जुन ने भीष्म पितामह पर हमला किया और भीष्म आहत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े, तब जाकर अंबा का क्रोध शांत हुआ।

धन्यवाद